महत्वपूर्ण एवं खास

जीत लो दुनिया

13 साल के सूखे के बाद आखिरकार भारतीय महिला हॉकी टीम ने एशिया कप जीत लिया। इसी साल जुलाई में जारी हुई महिला हॉकी वर्ल्ड रैंकिंग में चीन का स्थान आठवां जबकि भारत का बारहवां था। अपने से चार पायदान ऊपर इसी ताकतवर चीनी टीम को 5-4 से मात देकर भारत की लड़कियों ने कप तो जीता ही, अगले साल लंदन में होने वाले महिला हॉकी विश्व कप के लिए क्वालिफाई भी कर लिया। जापान के काकामिगहरा में हुए इस मैच में भारत की ओर से फॉरवर्ड खेल रहीं नवजोत कौर ने 25वें मिनट में एक गोल दागा। इसके बमुश्किल बीस मिनट बाद चीन को एक पेनाल्टी कॉर्नर मिला तो चीन की थ्येनथ्येन लुओ ने गोल दागते हुए मामला बराबर कर दिया। इसके बाद भारतीय टीम ने आक्रमण की पुरजोर कोशिशें की, लेकिन चीनी खिलाड़ियों ने उनकी एक न चलने दी। अंत तक दोनों टीमें 1-1 गोल से बराबरी पर चल रही थीं इसलिए मैच का फैसला करने के लिए शूटआउट का सहारा लिया गया। इस दौरान गोलकीपर सविता ने चीन का एक शॉट नाकाम किया तो टीम की कप्तान रानी सडन डेथ में विजयी गोल दागने में कामयाब रहीं। इस विजय यात्रा के दौरान भारतीय टीम ने सिंगापुर, चीन, मलयेशिया और कजाखस्तान को तो हराया ही, सेमीफाइनल में पिछली बार की चैंपियन जापानी टीम को भी परास्त किया। चौथी बार एशिया कप के फाइनल में पहुंची देश की महिला हॉकी टीम ने वर्ष 2004 में जापान को 1-0 से हराकर यह कप जीता था।

फिर वही काले पन्ने

काले धन के खिलाफ अपनी कार्रवाइयों का उत्सव मनाने में जुटी केंद्र सरकार को इसे लेकर हुए एक बड़े खुलासे पर मुंह खोलना चाहिए। डेढ़ साल पहले पनामा पेपर्स का खुलासा करने वाले जर्मन अखबार स्यूड्यूश जाइटुंग ने 1.34 करोड़ दस्तावेज पेश किए हैं, जिनसे पता चलता है कि कैसे दुनिया भर के राजनेताओं, अभिनेताओं, बहुराष्ट्रीय कंपनियों, सिले ब्रिटीज और हाई प्रोफाइल लोगों ने फर्जी ट्रस्ट फाउंडेशन और कागजी पंनियों के जरिए अपने काले धन को टैक्स अधिकारियों की नजर से छुपाकर देश का पैसा विदेश में रखने का जुगाड़ किया है। हमारे लिए चिंता की बात यह है कि इस लिस्ट में 714 भारतीयों के नाम भी शामिल हैं, जिनमें एक केंद्रीय मंत्री और एक नामी अभिनेता समेत देश के कई जाने-माने चेहरे भी साफ नजर आ रहे हैं। ऐक्टर अमिताभ बच्चन का नाम इससे पहले पनामा पेपर्स में भी आ चुका है, लेकिन किसी जांच का सामना करना तो दूर, उन्हें लोगों को अपना टैक्स नियमित रूप से अदा करने के लिए प्रेरित करने वाले सरकारी विज्ञापनों तक में लगातार देखा जा रहा है। केंद्रीय मंत्री जयंत सिन्हा और बीजेपी सांसद आरके सिन्हा के पास भी सफाई तैयार पाई गई, लेकिन वह तो देश के हर ताकतवर इंसान के पास हमेशा तैयार रहा करती है। यह सही है कि जब तक इन लोगों पर आरोप साबित नहीं हो जाता तब तक इन्हें दोषी नहीं माना जाएगा। लेकिन कुल मिलाकर ये लोग हमारे सिस्टम की, और इससे भी ज्यादा इस देश में रहने वाले आम लोगों की बेचारगी के जीवित प्रतीक हैं। सवाल है कि हमारी सरकार टैक्स चोरों के खिलाफ कुछ करना भी चाहती है या नहीं। पिछले मामलों को ही देखें। पनामा पेपर्स लीक में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को गद्दी छोड़नी पड़ी, लेकिन हमारे यहां अब तक कुछ भी नहीं हो पाया। उससे पहले आई एच एस बीसी की सूची पर भी नतीजा वही देखा गया। सरकार नोटबंदी और शेल कंपनियों पर प्रतिबंध को बड़ी कार्रवाई मान रही है।

हर पल ज़िंदगी जीएं ज़िंदादिली से

एक प्रसिद्ध फिल्म का गीत भी है कि 'आने वाला पल जाने वाला है, हो सके तो इस में जिंदगी बिता दो पल जो ये जाने वाला है।' यह बिल्कुल सही बात है। कुछ लोग एक पल में होते हैं और दूसरे ही पल चले जाते हैं। जिंदगी रहस्यमयी एवं रोमांचकारी होती है। यहां किसी को अपनी सांसों का पल भर भी अंदाजा नहीं कि पल में क्या हो जाए? इसलिए जीवन को जी भर के जीना चाहिए। एक महिला टाइटेनिक जहाज पर यात्रा कर रही थी। अचानक उसका मिठाई खाने का बहुत मन किया लेकिन उसने सोचा कि वह उस मिठाई को कुछ देर बाद खाएगी और उसके कुछ देर बाद ही टाइटेनिक जहाज डूब गया था और महिला की मिठाई खाने की इच्छा अधूरी रह गई। मियामी के गरीब इलाके में लेस ब्राउन और उनके जुड़वा भाई को उनके काम करने वाली बाई ने गोद ले लिया था। बचपन से ही लेस ब्राउन को डिस्क जॉकी बनने की धुन सवार थी। लेस ब्राउन निर्धनता में भी ट्रांजिस्टर पर डिस्क जॉकियों के कार्यक्रम सुनते थे। उन्होंने अपने एक छोटे से कमरे के फटे हुए विनाइल फर्श से काल्पनिक रेडियो स्टेशन बना लिया था। हेयर ब्रश उनका माइक्रोफोन बन जाता था और वह काल्पनिक श्रोताओं के सामने अपनी प्रस्तुति देते। इसी चाह ने उन्हें रेडियो स्टेशन तक पहुंचा दिया और वह वहां पर डिस्क जॉकियों के लिए कॉफी, लंच पहुंचाने का काम करते रहे। किसी को यह अंदाजा नहीं था कि लेस ब्राउन के मन में डीजे बनने की तड़प कितनी गहरी है। एक दिन संयोगवश एक डीजे की तबीयत खराब हो गई। लाइव कार्यक्रम चल रहा था। ऐसे में स्टेशन मास्टर बोले, 'लेस जल्दी से कहीं से एक डीजे तलाश कर लाओ।' लेस ब्राउन ने स्टेशन मास्टर को जवाब दिया कि सर 'दूसरे डीजे का विकल्प मेरे रूप में आपके सामने है।' स्टेशन मास्टर लंच कॉफी पकड़ाने वाले लेस ब्राउन के मुंह से यह सुनकर बोले, 'आर यू श्योर।' 'जी सर।' लेस ब्राउन तुरंत कंट्रोल पैनल के सामने वाली सीट पर बैठे और माइक्रोफोन का स्विच ऑन करते हुए बोलना शुरू हो गए। लेस ब्राउन की आवाज में गजब का उत्साह, चुस्ती-फुर्ती और स्टाइल से श्रोताओं को जोड़ने की तरकीब ने उन्हें एक पल में सुपरहिट बना दिया। इसके बाद लेस ब्राउन का जो कॅरिअर प्रारंभ हुआ तो वह उन्हें राजनीति, सार्वजनिक संभाषण, विश्व प्रसिद्ध मोटीवेटर और टेलीविजन के क्षेत्रों तक ले गया। आज प्रत्येक वह व्यक्ति जो प्रेरणादायी टेप अथवा पुस्तक सुनता या पढ़ता है वह लेस ब्राउन से भली-भांति परिचित है।। यही कार्पे मोमेंटम का लक्ष्य है।

प्रत्येक व्यक्ति को हर दिन में चौबीस घंटे दिये गए हैं और उनके खाते में 1440 मिनट जमा हैं। जब ये मिनट खर्च हो जाते हैं तो करोड़ों की दौलत देकर भी एक अतिरिक्त पल को नहीं पाया जा सकता है। इसी से समझा जा सकता है कि पल अनमोल है।'हम सबके पास चौबीस मालवाहक ट्रक हैं, जो हमें हर दिन दिए जाते हैं।

आप उन्हें धूल से भरते हैं या फिर हीरों से, यह आपके हाथों में है।' इसलिए इस पल को जाने न दें। अपने पल का प्रयोग करें और अपने दिन का सदुपयोग करें।

न्याय के एक और मंदिर का विचार

सब से पहले एक छोटा-सा किस्सा, जो कम लोग जानते हैं. समाजवादी नेता डॉ. राममनोहर लोहिया 1963 में फरूखाबाद से एक उपचुनाव जीत कर संसद में पहुंचे थे.1967 में उनकी मृत्यु हुई. इस छोटी-सी अवधि में डॉक्टर साहब ने संसद को हिला कर रख दिया था. लोक सभा में जो भाषण दिए और जैसी बहसें शुरू कीं, वे बेजोड़ हैं. उतनी जीवंत लोक सभा न इसके पहले दिखाई पड़ी थी, और न उसके बाद. लोक सभा में आने के लगभग चार वर्षों तक वे सांसद रहे. 12 अक्टूबर, 1967 को उनकी मृत्यु हो गई. फरूखाबाद से उनके चुनाव को अदालत में चुनौती दी गई. अदालत का फैसला उनकी मृत्यु के बाद आया. फैसला था कि लोहिया का चुनाव वैध नहीं था. वह रद्द हो गया था.अगर उस उपचुनाव में लोहिया हार जाते तो निश्चय ही संसद और देश का बहुत नुकसान होता. लोहिया हार जाते तो कोई और उम्मीदवार जीत जाता. वह कौन होता, इसकी सूचना मेरे पास नहीं है. लेकिन जो भी आदमी जीतता, उसका कद डॉ. लोहिया से बहुत छोटा होता. फिर भी जीत जीत है, और हार हार है. उस पराजित उम्मीदवार को न्याय मिलने में चार साल से ज्यादा हो गए. इस अवधि में डॉक्टर साहब फरूखाबाद के वैध प्रतिनिधि नहीं थे. इस घटना से समझ सकते हैं कि अदालत का फैसला देर से आने पर कितना अनर्थ हो सकता था. अगर इस उपचुनाव से संबंधित मुकदमे का नतीजा ज्यादा से ज्यादा तीन-चार महीने में आ जाता, तो इस अनर्थ को रोका जा सकता था.इसी हफ्ते सर्वोच्च न्यायालय इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि राजनेताओं से संबंधित मुकदमों के लिए विशेष अदालतें होनी चाहिए ताकि उनका निपटारा जल्द से जल्द हो सके. उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर कई आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं. मजे की बात यह कि उनके विरु द्ध चल रहे मुकदमों में पुलिस आगे क्या कार्रवाई करे, इसकी फाइल नये मुख्यमंत्री की मेज पर ही आई. योगी के हृदय में राजनैतिक नैतिकता के लिए तनिक भी सम्मान होता तो उन मुकदमों को चलने देते. सजा नहीं मिलती तो दावा कर सकते थे कि उन पर मुकदमे राजनैतिक कारणों से दर्ज कराए गए थे. अब जबकि ये मुकदमे स्थगित हैं, या पुलिस उनमें रु चि नहीं ले रही है, तो शक बना रह जाता है कि उनका अतीत आपराधिक रहा है, या नहीं. प्रस्तावित विशेष अदालतें काम कर रही होतीं तो अनिश्चय की वर्तमान स्थिति न होती. किसी सांसद ने हत्या की है, तो जब तक उसे सजा नहीं मिल जाती, उसे निर्दोष ही माना जाएगा और तब तक वह चुनाव लड़ सकता है, मंत्री बन सकता है. मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री भी बन सकता है. जब तक अदालत उसे निर्दोष घोषित नहीं कर देती तब तक हम उसकी स्वतंत्रता से उसे वंचित कैसे कर सकते हैं? यह कानूनी तर्क है, लेकिन यह भी सही है कि सरकार अपने विरोधियों और आंदोलन कर्ताओं पर बेवजह मुकदमे ठोक देती है. फर्जी मुकदमों का नुकसान किसी निर्दोष को क्यों उठाना पड़े? इसलिए वाजिब है कि न्याय की प्रक्रिया को ही तेज किया जाए ताकि कोई अपराधी अपनी लोक तांत्रिक सुविधाओं का दुरुपयोग न कर सके. लेकिन विशेष अदालतें गठित करने का यह सिलसिला कब तक चलेगा? पहले से ही हमारे पास कई विशेष अदालतें हैं, जैसे फास्ट ट्रैक अदालतें, सीबीआई की अदालतें, आतंकवाद से संबंधित अपराधों पर सुनवाई करने वाली अदालतें. वस्तुतः 1979 में स्पेशल कोर्ट्स एक्ट पारित किया गया था, जिसमें सरकार को अधिकार है कि वह किसी खास उद्देश्य के लिए विशेष अदालत या अदालतों का गठन कर सकती है. लेकिन विशेष अदालतों के गठन से विभिन्न न्यायालयों में लंबित मुकदमों की संख्या बढ़ती जा रही है यानी विशेष अदालतों की स्थापना से साधारण अदालतों को कुछ खास राहत नहीं मिल सकी है. असल में, जहां भी स्पेशल या विशेष का दर्जा है, वह साधारण का अपमान है. आम नागरिक ने हत्या की है, तो उसका मुकदमा आठ-दस सालों तक झूलता रहे और किसी सांसद ने की है, तो उसके मुकदमे का निपटारा दो-तीन महीने में, यह विषमता और अन्याय नहीं है तो क्या है?

कहीं गम, कहीं खुशी

आठ नवंबर को नोटबंदी की वर्षगांठ है, जिसे लोग बरसी भी कह रहे हैं। इस दिन कांग्रेस के साथ पूरा विपक्ष जहां काला दिवस मनाएगा, वहीं भाजपा कालाधन विरोधी दिवस मनाएगी। किसी ने पूछा भई कांग्रेस और विपक्ष का तो काला दिवस मनाना समझ में आता है कि उस दिन उनके मुताबिक मोदीजी ने देश की नोटबंदी का हुक्म जारी किया था, पर भाजपा कालाधन विरोधी दिवस क्यों मना रही है? क्या अभी विदेश में जमा काला धन आया नहीं है। नहीं-नहीं, हम यह इसलिए पूछ रहे हैं कि बहुत दिन से बाबा रामदेव कुछ बोल नहीं रहे तो हमने सोचा कि आ गया होगा। खैरख्वाहों ने कहा-आ गया होता तो क्या तुम्हारे खाते में पंद्रह लाख जमा नहीं होते। अरे साहब, मेरे खाते में तो वह पैसा भी जमा नहीं हुआ जिसके बारे में संघ-भाजपा वाले कभी यह प्रचार कर रहे थे कि तुम्हारे जन-धन खाते में बड़ी मोटी रकम जमा होगी। फिर नोटबंदी के बाद भी तो उनका प्रचार यही था कि जितना भी काला धन होगा सारा तुम्हारे ही तो खाते में जाएगा। पर पैसा तो सारा बैंकों में वापस जमा हो गया। जनाब आने वाला आठ नवंबर किसी के लिए खुशी तो किसी के लिए गम का दिन होगा। भाजपा इस दिन जश्न मनाएगी। किस बात का? बैंकों के सामने लोगों ने पुलिस से जो लाठी-डंडे खाए क्या उसका जश्न, लोगों ने जो रोजगार खोए क्या उसका जश्न, अर्थ व्यवस्था की मुश्किलों का जश्न या फिर लाइनों में खड़े-खड़े जो लोग मर गए थे, उनकी मौत का जश्न।

वाम नजरिए के दक्षिणपंथी तेवर

सोवियत संघ के विघटन के दिनों में करीब दो साल मास्को में रहने के कारण भारत में सत्ताधारी व्यवस्थापकों द्वारा विचारधारा को कर्कश राष्ट्रवाद के साथ जोड़ने की लय दिन-ब-दिन समझ आती जा रही है। पूर्ण ताकत की चाहत रखने वाली हर वामपंथी अथवा दक्षिणपंथी हुकूमत की विशेषताएं एक जैसी ही होती हैं। राजस्थान की सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी के जयपुर के मेयर अशोक लाहोटी ने पार्टी तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अध्यक्षता वाले व्यापक संघ परिवार को जानने का एक सही मामला उपलब्ध करवा दिया है। वह चर्चित कम्युनिस्ट विषय धुन के साथ शुरुआत करते हैं कि अगर आप हमारे साथ नहीं हैं तो आप दुश्मन के साथ हैं। यह शिक्षा रूपी फटकार उन लोगों को लगाई गई थी जो कि सुबह नगर निगम संबंधी अपनी ड्यूटी राष्ट्रगान के साथ शुरू करने और समापन वंदे मातरम के साथ करने का विरोध कर रहे थे। उनकी हिदायत थी कि ऐसे विरोधियों को पाकिस्तान चले जाना चाहिए, हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में टिप्पणी की थी कि देशभक्ति आस्तीन पर पहनी हुई नहीं होनी चाहिए। कम्युनिस्टों के अब पुराने पड़ चुके शासन के तरीकों के आकर्षण का शिकार होने वाले लाहोटी कोई अकेले व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि आरएसएस की भी इस तरह के आदेश जारी करने में विशेष रुचि है कि एक निजी व्यक्ति को कैसे रहना, खाना और काम करना चाहिए। गाय के अधिकांश देशवासियों की श्रद्धा का प्रतीक होने की बात को ध्यान में रखते हुए गोमांस निषिद्ध है, लेकिन विशेष रूप से महिलाओं को क्या पहनना चाहिए, इस बात के लिए भी फरमान जारी किये जाते हैं। अंततः अब सुबह की ड्रिल में खाकी नेकर में अशोभनीय दिखने वाले पेट निकले श्रद्धेय पुरुषों को पतलून पहनाने का फरमान जारी किया गया है।राहुल गांधी ने पिछले दिनों शाखाओं में महिलाओं की अनुपस्थिति का जिक्र किया। इसका मकसद देशभक्तिपूर्ण रूढ़िवादी सोच पर तंज कसना था कि महिलाओं की मुख्य भूमिका घर तक सीमित है या फिर ज्यादा से ज्यादा एक पुरुष नेता के सहयोगी तक।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. व्यर्थ, अकारण, बेवजह (उर्दू) 4. साथ में, सहित 5. वर्षा, बारिश, बरखा 8. कथा, किस्सा 9. चिढ़चिड़ा, बदमिजाज 11. प्रलय, आफत, हलचल 12. लाख ढकने का कपड़ा 13. पिता, क्लर्क, सम्मानित व्यक्ति 14. वायु, पवन 16. निवास करना, उपस्थित होना, ठहरना 18. जिसे लात खाने की आदत हो गई हो 19. सेवक, दास, चाकर 21. भ्राता 22. मेघ, जलद, नीरद।

ऊपर से नीचे

1. विशेष, विशिष्ट 2. सुगंध, खुशबू 3. आदमी, मनुष्य, मानव 5. अपेक्षाकृत, अपेक्षया 6. कष्ट, दर्द, दिक्कत 7. पठन, पढ़ने का काम, शिक्षा 10. किस्मत, नसीब, भाग्यवान 12. एक पक्षी जो पुराने समय में संदेश वाहक का काम करता था 13. बाल, बच्चा, लड़का, छोकरा 17. वायु संबंधी, हवा में रहने, उड़ने या होने वाला, बिलकुल काल्पनिक और निर्मूल 19. नाव, कश्ती 20. वर्ष, बरस, एक इमारती वृक्ष।

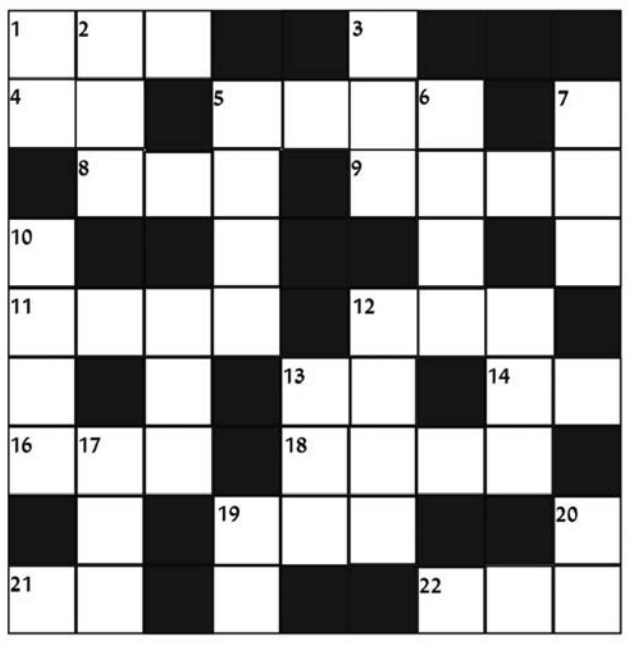

पूर्व का हल

पं	क्ति		स्वा	द		स	ब	ब
जा		सु	हा	ना			ली	द
ब	हु	धा		द	ल	ना		ल
		क	मा	न		ग	ह	ना
भं	व	र				वा	म	
गी	त		म	ज	बू	र		ट
	न	म	स्का	र				र
		र्या			बी		ना	का
सं	वि	दा		ब	स	च	ल	ना

सू-दोकू

	1			4			7	
		6	9		2			1
	7			6		8		2
1							8	
	8			5		2		3
3		2			4		1	
	3		2			4		
		8		1	6			7
9			4				2	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

पूर्व का हल

3	9	6	8	2	5	4	7	1
8	2	5	1	7	4	6	3	9
7	1	4	6	9	3		2	5
1	8	9	3	6	7	2	5	4
2	6	7	5	4	8	1	9	3
5	4	3	9	1	2	7	8	6
6	7	2	4	3	9	5	1	8
9	5	1	7	8	6	3	4	2
4	3	8	2	5	1	9	6	7

राशिफल

मेष-कार्यक्षेत्र में आप जितना ही प्लानिंग के साथ कार्य पूर्ण करने की कोशिश करेंगे, उतनी ही कार्य में सफलता आपको मिल सकती है।

वृष- कामकाज को लेकर किसी बात को लेकर तनाव हो सकता है। वहीं कार्य को लेकर की गई यात्रा के भी इस दौरान शुभ परिणाम मिलेंगे।

मिथुन- आज आर्थिक-वृद्धि के शुभ योग बन रहे हैं। कलात्मक कार्यों द्वारा ज्यादा फायदे प्राप्त होंगे।

कर्क- आर्थिक वृद्धि के शुभ योग बन रहे हैं। कोई नया निवेश करने से घबराएं नहीं, अंत में फायदा ही होगा।

सिंह- कार्यक्षेत्र में नई शुरुआत आपके लिए शुभ संकेत लेकर आ रही है।

कन्या- व्यवसायिक रूप से आपकी तारिफ होगी और आपके प्रयासों को सराहा जायेगा।

तुला- कार्यक्षेत्र में नई शुरुआत आपके लिए शुभ संकेत लेकर आ रही है।

वृश्चिक- कार्यक्षेत्र में संयम से काम लेने के अलावा सभी को साथ लेकर चलने से ही उन्नति के अच्छे संकेत मिल पाएंगे।

धनु- परिवार के पूर्ण सहयोग से किसी बड़ी आर्थिक समस्या का हल निकल आएगा। इसके साथ ही पिछली यात्राओं के भी शुभ संकेत मिल सकते हैं।

मकर- परिवार में सुख और समृद्धि के योग बन रहे हैं। आर्थिक स्थितियों में सुधार संभव है। वहीं कोई नई पार्टनरशिप भी सफल रहेगी।

कुंभ- आर्थिक सुख एवं समृद्धि के योग आपके लिए बन रहे हैं। आप अपने निवेश की तरफ ज़्यादा ध्यान देंगे एवं उन्हें एक अच्छी प्लानिंग के तहत शुभ स्थितियों की तरफ अग्रसर करेंगे

मीन- आप अपनी किस्मत के मालिक रहेंगे एवं इसका सारा असर आपकी यात्राओं में नज़र आएगा।